=सत्त्वगुण; **भवति**=(प्रधान) हो जाता है; **भारत**=हे अर्जुन; **रजः**=रजोगुण; **सत्त्वम्**=सत्त्वगुण को (दबाकर); **तमः**=तमोगुण; **च**=भी; **एव**=उसी प्रकार; **तमः**=तमोगुण (और); **सत्त्वम्**=सत्त्वगुण को (दबाकर); **रजः**=रजोगुण (बढ़ता है); **तथा**=उसी प्रकार।

अनुवाद

हे अर्जुन! कभी सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाकर रजोगुण प्रधान हो जाता है, कभी सत्त्वगुण रजोगुण को परास्त कर देता है और वैसे ही कभी तमोगुण भी सत्त्वगुण और रजोगुण से अधिक बढ़ जाता है। इस प्रकार इन तीनों गुणों में प्रभुत्व के लिए निरन्तर स्पर्धा बनी रहती है।।१०।।

तात्पर्य

जब रजोगुण प्रधान हो, तो सत्त्वगुण और तमोगुण परास्त हो जाते हैं। सत्त्वगुण का प्राबल्य होने पर रजोगुण और तमोगुण दब जाते हैं। इसी प्रकार तमोगुण की अभिवृद्धि से सत्त्वगुण और रजोगुण परास्त हो जाते हैं। तीनों गुणों में यह पारस्परिक होड़ निरन्तर चलती रहती है। अतएव जो कृष्णभावनाभावित होने का सच्चा अभिलाषी है, उसे इन तीनों ही गुणों का उल्लंघन करना होगा। मनुष्य में जिस भी गुण की प्रधानता हो, वह उसके व्यवहार, कार्य-कलाप तथा आहार आदि में झलकता है। इस तत्त्व का वर्णन अनुवर्ती अध्यायों में किया जायगा। परन्तु यदि कोई चाहे तो अभ्यास के द्वारा सत्त्वगुण को विकसित करके रजोगुण तथा तमोगुण को परास्त कर सकता है। इसी प्रकार रजोगुण को बढ़ाकर सत्त्वगुण और तमोगुण को अभिभूत किया जा सकता है, अथवा तमोगुण को अभिवृद्ध करके सत्त्व और रज को दबाया जा सकता है। मनुष्य में माया के ये तीनों गुण हैं; पर यदि वह दृढ़ निश्चय सहित प्रयत्न करे तो केवल सत्त्वगुण में स्थित हो सकता है—और फिर इस सत्त्वगुण का भी उल्लंघन करने पर शुद्धसत्त्व अथवा 'वसुदेव' नामक उस अवस्था में पहुँच सकता है, जिसमें भगवत्-तत्त्व का बोध होता है। किसी की क्रियाओं से यह जाना जा सकता है कि वह माया के किस गुण में स्थित है।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।।११।।

सर्वद्वारेषु=सब इन्द्रियरूप द्वारों में; **देहे अस्मिन्**=इस देह में; **प्रकाशः**=चेतना की; **उपजायते**=अभिवृद्धि होती है; **ज्ञानम्**=बोधशक्ति की (भी); **यदा**=जिस काल में; **तदा**=उस समय; **विद्यात्**=जानना चाहिए; **विवृद्धम्**=बढ़ा हुआ है; **सत्त्वम्**=सत्त्वगुण; **इति**=ऐसा; **उत**=कहा है।

अनुवाद

सत्त्वगुण के बढ़ने पर इस देह के सब इन्द्रियरूप द्वार ज्ञान से प्रकाशित हो उठते हैं।।११।।

तात्पर्य

दो नेत्र, दो कर्ण, दो नासाछिद्र, मुख, उपस्थ तथा गुदा—देह के ये नौ द्वार हैं।